Dr. Kumari Priyanka

H.D jain college, ara

History department

Notes for B.A part 3

Topic :- तुगलक वंश के पतन के कारण

तुगलक वंश (1320-1414 ई.) दिल्ली सल्तनत का तीसरा प्रमुख वंश था, जिसकी स्थापना **ग़ियास-उद-दीन तुगलक** ने की थी। यह वंश अपनी शक्ति, प्रशासनिक सुधारों और विस्तारवादी नीतियों के लिए जाना जाता है, लेकिन इसके पतन के कई कारण थे। मुख्य कारण इस प्रकार हैं:

1. अत्यधिक विस्तारवादी नीतियाँ

मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने साम्राज्य को दक्षिण भारत तक विस्तारित किया, लेकिन इतने बड़े भूभाग पर नियंत्रण बनाए रखना कठिन हो गया। प्रशासनिक व्यवस्था विफल रही, और कई क्षेत्रों में विद्रोह शुरू हो गए।

2. अव्यवहारिक नीतियाँ

मुहम्मद बिन तुगलक की कई नीतियाँ अव्यवहारिक साबित हुईं:

- राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद (देवगिरी) स्थानांतरित करना।
- तांबे के सिक्कों को कानूनी मुद्रा घोषित करना, जिससे अर्थव्यवस्था में अस्थिरता आ गई।
- भारी कर वृद्धि और जबरन वसूली से किसानों में असंतोष बढ़ा।

3. प्रशासनिक विफलताएँ

प्रशासनिक ढांचा कमजोर था और अधिकारियों में भ्रष्टाचार फैल गया। मुहम्मद बिन तुगलक की कठोर नीतियों के कारण प्रांतीय शासकों में असंतोष बढ़ा और वे स्वतंत्र होने लगे।

4. प्रांतीय विद्रोह

साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में लगातार विद्रोह हुए:

- दक्षिण में **विजयनगर साम्राज्य** और **बहमनी साम्राज्य** का उदय।
- बंगाल, गुजरात, और मालवा जैसे प्रांतों में स्वतंत्र सल्तनतों की स्थापना।

5. फिरोज शाह तुगलक की कमजोर नेतृत्व क्षमता

फिरोज शाह तुगलक (1351-1388 ई.) ने कुछ सुधार किए, जैसे सिंचाई प्रणाली का विकास, लेकिन वह विद्रोहों को दबाने में असफल रहा। उसके शासनकाल के बाद वंश में उत्तराधिकार की लड़ाई शुरू हो गई।

6. मंगोल आक्रमण और तैमूर का आक्रमण (1398 ई.)

तैमूर का आक्रमण तुगलक वंश के पतन में निर्णायक सिद्ध हुआ। दिल्ली की लूट और विनाश ने साम्राज्य की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया।

7. आंतरिक संघर्ष और उत्तराधिकार की समस्या

फिरोज शाह तुगलक की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के लिए संघर्ष तेज हो गया। इससे साम्राज्य कमजोर हुआ और केंद्रीय सत्ता का पतन हुआ।

8. सामाजिक असंतोष

कठोर कर नीति और धार्मिक असहिष्णुता ने समाज में व्यापक असंतोष पैदा किया। इससे सल्तनत की नींव और कमजोर हो गई।

निष्कर्ष

तुगलक वंश का पतन मुख्यतः इसके शासकों की अव्यावहारिक नीतियों, प्रशासनिक विफलताओं, लगातार विद्रोहों, और बाहरी आक्रमणों के कारण हुआ। अंततः 1414 ई. में **खिज्र खां** ने तुगलक वंश को समाप्त कर **सैयद वंश** की स्थापना की।